AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

वैश्वीकरण का भारतीय महिलाओं पर प्रभाव

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. ममता सिरमौर वर्मा
एम.ए., एम. फ़िल., पी.एच.डी., सेट(समाजशास्त्र)
अतिथि व्याख्याता,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

वैश्वीकरण एक जटिल घटना है जिसने मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है, जिसमें लैंगिक भूमिकाएं और संबंध शामिल हैं। महिलाएं कई तरह से प्रभावित हुई हैं और भारत इसका अपवाद नहीं है। प्रस्तुत शोधपत्र भारत में महिलाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव की जांच करता है, तीन प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है: आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक। अध्ययन से पता चलता है कि जहां वैश्वीकरण ने भारत में महिलाओं के लिए नए अवसर पैदा किए हैं, वहीं इसने लैंगिक असमानताओं और भेदभाव को भी कायम रखा है। लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और महिलाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से नीतियों को स्थानीय संदर्भ को ध्यान में रखना चाहिए और भारत में महिलाओं की जरूरतों और आकांक्षाओं के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए। वैश्वीकरण ने लाभ और चुनौतियां दोनों लाते हुए दुनिया को बदल दिया है। इसने आर्थिक विकास और गरीबी में कमी लाने में योगदान दिया है, इसने आय असमानता, पर्यावरणीय गिरावट और कुछ क्षेत्रों में नौकरियों के नुकसान में भी योगदान दिया है। वैश्वीकरण ने आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय गिरावट और सांस्कृतिक समरूपता सहित महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी पेश की हैं। व्यापार और निवेश नीतियों के उदारीकरण ने प्रतिस्पर्धा में वद्धि की है और नौकरी के नुकसान और कुछ क्षेत्रों में मजदूरी में गिरावट आई है।

मुख्य शब्द

मीडिया, महिला शिक्षा, महिला एवं समाज, वैश्वीकरण, महिला।

प्रस्तावना

वैश्वीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसने दुनिया भर के समाजों को प्रभावित किया है। यह अंतरराष्ट्रीय व्यापार, निवेश और संचार के तेजी से विस्तार के कारण अर्थव्यवस्थाओं, समाजों और संस्कृतियों के बढ़ते अंर्तसंबंध को संदर्भित करता है। वैश्वीकरण ने आर्थिक वृद्धि और विकास के लिए नए अवसर पैदा किए हैं। यह विशेष रूप से लैंगिक समानता और महिलाओं के अधिकारों के संबंध में महत्वपूर्ण चुनौतियां भी लेकर आया है।

भारत में, महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा है। भारत में महिलाओं को ऐतिहासिक रूप से शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व तक पहुँचने में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना

पड़ा है। भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक प्रकृति ने लैंगिक असमानताओं और भेदभाव को कायम रखा है, खासकर महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक अवसरों के संबंध में।

वैश्वीकरण ने महिलाओं के लिए वैश्विक अर्थव्यवस्था में भाग लेने के नए अवसर पैदा किए हैं, विशेषकर सूचना प्रौद्योगिकी, व्यवसाय प्रक्रिया, आउटसोर्सिंग और वस्त्र जैसे उद्योगों में। हालांकि, वैश्विक बाजार के विस्तार से अनौपचारिक क्षेत्र का भी विकास हुआ है, जो कम–कुशल और कम वेतन वाली नौकरियों में बड़ी संख्या में महिलाओं को रोजगार देता है। अनौपचारिक क्षेत्र में घरेलू काम, छोटे पैमाने पर निर्माण और स्ट्रीट वेंडिंग जैसी गतिविधियां शामिल हैं। अनौपचारिक क्षेत्र में महिलाओं को काम करने की खराब स्थिति, कम वेतन और सामाजिक सुरक्षा तक सीमित पहुंच सहित महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

इसके अलावा, वैश्वीकरण का भारत में सामाजिक मानदंडों और लिंग संबंधों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। उपभोक्ता संस्कृति के विकास और महिलाओं के शरीर के वस्तुकरण के कारण कॉस्मेटिक सर्जरी, बॉडी शेमिंग और यौन उत्पीड़न में वृद्धि हुई है। पश्चिमी सांस्कृतिक मूल्य और मानदंड भारतीय समाज में तेजी से प्रचलित हो गए हैं, जिससे पारंपरिक लिंग भूमिकाओं और मूल्यों से दूर हो गए हैं।

इस शोधपत्र का उद्देश्य भारत में महिलाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव की जांच करना है, जिसमें तीन प्रमुख क्षेत्रों: आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यह औपचारिक और अनौपचारिक क्षेत्रों में आर्थिक अवसरों तक पहुँचने में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों के साथ–साथ सामाजिक मानदंडों और लैंगिक संबंधों पर वैश्वीकरण के प्रभाव का पता लगाएगा। यह शोधपत्र भारत में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और महिलाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से नीतियों और हस्तक्षेपों की भी जांच करेगा और वैश्वीकरण के संदर्भ में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने में उनकी प्रभावशीलता का आकलन करेगा।

आर्थिक प्रभाव

वैश्वीकरण का भारत में महिलाओं के लिए उपलब्ध आर्थिक अवसरों पर मिश्रित प्रभाव पड़ा है। एक ओर, वैश्विक बाजार में भारतीय अर्थव्यवस्था के एकीकरण ने महिलाओं के लिए कार्यबल में, विशेष रूप से सेवा क्षेत्र में भाग लेने के नए अवसर पैदा किए हैं। वैश्विक उत्पादन श्रृंखला में महिलाएं श्रम का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गई हैं, कई कंपनियां अपने काम को भारत में आउटसोर्स कर रही हैं।

हालांकि, कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी सामाजिक मानदंडों और पितृसत्तात्मक रवैये के कारण सीमित रहती है जो उनकी गतिशीलता और शिक्षा और प्रशिक्षण तक पहुंच को प्रतिबंधित करती है। भारत में कई महिलाओं से अभी भी पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को पूरा करने की उम्मीद की जाती है, जैसे कि उनके परिवारों की देखभाल करना, जो घर के बाहर भुगतान वाले काम में संलग्न होने की उनकी क्षमता को सीमित कर सकता है। वंचित पृष्ठभूमि की महिलाओं, जैसे कि निचली जातियों, जनजातियों और अल्पसंख्यक समुदायों की महिलाओं को भेदभाव और बहिष्कार के कारण आर्थिक अवसरों तक पहुँचने में अतिरिक्त बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

इसके अलावा, वैश्विक उत्पादन श्रृंखला में महिलाओं का काम अक्सर कम भुगतान वाला और अनिश्चित होता है, जिसमें सीमित नौकरी की सुरक्षा और करियर में उन्नति के कुछ अवसर होते हैं। विशेष रूप से अनौपचारिक क्षेत्र में कम–कुशल और कम–वेतन वाली नौकरियों में महिलाओं का असमान रूप से प्रतिनिधित्व किया जाता है। अनौपचारिक क्षेत्र का विकास महिलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है, क्योंकि यह बहुत कम नौकरी की सुरक्षा, काम करने की खराब स्थिति और सामाजिक सुरक्षा तक सीमित पहुंच प्रदान करता है।

इन चुनौतियों के बावजूद वैश्वीकरण ने महिला उद्यमियों और छोटे व्यवसाय के मालिकों के लिए भी अवसर पैदा किए हैं। भारत में महिलाओं के स्वामित्व वाले व्यवसाय बढ़ रहे हैं, खासकर सूचना प्रौद्योगिकी, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा जैसे क्षेत्रों में। हालांकि, महिला उद्यमियों को महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें वित्त, बाजार और नेटवर्क तक सीमित पहुंच शामिल है।

वैश्वीकरण ने भारत में महिलाओं के लिए नए आर्थिक अवसरों का नेतृत्व किया है, इसने लैंगिक असमानताओं और भेदभाव को भी कायम रखा है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी सामाजिक मानदंडों और पितृसत्तात्मक रवैये के कारण सीमित है और अनौपचारिक क्षेत्र के विकास ने महिलाओं के लिए नई चुनौतियां पैदा की हैं। नीति निर्माताओं को इन चुनौतियों का समाधान करना चाहिए और वैश्वीकरण के संदर्भ में लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना चाहिए। यह नीतियों और हस्तक्षेपों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जो शिक्षा और प्रशिक्षण तक पहुंच में सुधार करते हैं, महिलाओं की उद्यमिता को बढ़ावा देते हैं, और उन संरचनात्मक बाधाओं को दूर करते हैं जो औपचारिक अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी को सीमित करती हैं।

सामाजिक प्रभाव

वैश्वीकरण का भारत में महिलाओं पर रखी गई सामाजिक भूमिकाओं और अपेक्षाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। वैश्वीकरण के सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभावों में से एक उपभोक्ता संस्कृति का विकास और महिलाओं के निकायों का वस्तुकरण रहा है। महिलाओं के शरीर इच्छा और उपभोग की वस्तु बन गए हैं, जिससे महिलाओं के वस्तुकरण और यौनकरण में वृद्धि हुई है। महिलाओं को अक्सर विज्ञापन और मीडिया में यौन वस्तुओं के रूप में चित्रित किया जाता है, जो हानिकारक लैंगिक रूढ़िवादिता को कायम रखता है और महिलाओं के खिलाफ हिंसा की संस्कृति में योगदान देता है।

मीडिया के वैश्वीकरण का भारत में लैंगिक भूमिकाओं और संबंधों पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। पश्चिमी सांस्कृतिक मूल्य और मानदंड भारतीय समाज में तेजी से प्रचलित हो गए हैं, जिससे कॉस्मेटिक सर्जरी, बॉडी शेमिंग और यौन उत्पीड़न में वृद्धि हुई है। सुंदरता, स्त्रीत्व और कामुकता के पश्चिमी आदर्शों को कई भारतीय महिलाओं ने आत्मसात कर लिया है, जिससे संकीर्ण सौंदर्य मानकों और लिंग भूमिकाओं के अनुरूप दबाव पैदा हो गया है।

इसके अलावा, सेवा क्षेत्र और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के विकास ने महिलाओं के लिए नए अवसर पैदा किए हैं, लेकिन इसने शोषण और दुर्व्यवहार के नए रूपों को भी जन्म दिया है। कई महिलाएं कम वेतन वाली, अनौपचारिक नौकरियों में काम करती हैं जो बहुत कम नौकरी सुरक्षा या सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती हैं, जिससे उन्हें शोषण और दुर्व्यवहार का शिकार होना पड़ता है। सेवा क्षेत्र में काम करने वाली महिलाएं, जैसे कि घरेलू काम, अक्सर अपने नियोक्ताओं से यौन उत्पीड़न और हिंसा का शिकार होती हैं।

भारत में महिलाओं पर वैश्वीकरण के सामाजिक प्रभाव जटिल और विविध रहे हैं, जबकि वैश्वीकरण ने महिलाओं के लिए नए आर्थिक अवसर पैदा किए हैं, इसने हानिकारक लैंगिक रूढ़िवादिता को भी कायम रखा है। महिलाओं के शरीर को वस्तुकृत किया है, और महिलाओं के खिलाफ हिंसा की संस्कृति में योगदान दिया है। नीति निर्माताओं को वैश्वीकरण के संदर्भ में इन चुनौतियों का समाधान करने और लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए काम करना चाहिए। यह नीतियों और हस्तक्षेपों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जो लिंग–संवेदनशील मीडिया को बढ़ावा देते हैं, महिलाओं के खिलाफ हिंसा के मूल कारणों को संबोधित करते हैं, और शिक्षा और प्रशिक्षण तक महिलाओं की पहुंच को बढ़ावा देते हैं।

सांस्कृतिक प्रभाव

भारत में महिलाओं पर वैश्वीकरण का सांस्कृतिक प्रभाव महत्वपूर्ण रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण और मध्यम वर्ग के विकास के कारण पारंपरिक लिंग भूमिकाओं और संबंधों में बदलाव आया है। महिलाओं को तेजी से परिवार और समाज में समान भागीदार के रूप में देखा जाता है, और कार्यबल में उनकी भागीदारी को एक सकारात्मक विकास के रूप में देखा जाता है। शिक्षा और रोजगार के अवसरों के विस्तार ने महिलाओं को सशक्त बनाया है, और वे अब पहले की तुलना में अधिक स्वतंत्र और मुखर हैं। महिलाएं जीवन में बाद में शादी करने, कम बच्चे पैदा करने और करियर बनाने, पारंपरिक लिंग मानदंडों और अपेक्षाओं को चुनौती देने का विकल्प चुन रही हैं।

हालाँकि, पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ और पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण भारतीय समाज में गहराई से व्याप्त हैं, और

महिलाओं को अर्थव्यवस्था, समाज और राजनीति में उनकी पूर्ण भागीदारी के लिए महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ता है। सामाजिक मानदंडों और पितृसत्तात्मक रवैये के कारण महिलाओं की गतिशीलता अक्सर प्रतिबंधित होती है, जो शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और अन्य संसाधनों तक उनकी पहुंच को सीमित करती है। घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न और हमले सहित महिलाओं के खिलाफ हिंसा कानूनी सुधारों और सामाजिक सक्रियता के बावजूद भारतीय समाज में एक व्यापक समस्या बनी हुई है।

भारतीय संस्कृति के वैश्वीकरण से पारंपरिक सांस्कृतिक प्रथाओं और मूल्यों का भी क्षरण हुआ है, जिससे व्यक्तिवाद में वृद्धि हुई है और समुदाय आधारित मूल्यों में गिरावट आई है। इसका महिलाओं पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह का प्रभाव पड़ा है। एक ओर, इसने नए सांस्कृतिक रूपों का उदय किया है जो व्यक्तिवाद, विविधता और रचनात्मकता का जश्न मनाते हैं, जिससे महिलाओं को खुद को अभिव्यक्त करने और अपनी पहचान पर जोर देने के लिए नई जगह मिलती है। दूसरी ओर, इसने सांस्कृतिक प्रथाओं के समरूपीकरण और स्थानीय और स्वदेशी संस्कृतियों के हाशिए पर जाने का भी नेतृत्व किया है, जो महिलाओं की पहचान और पहचान की भावना को कमजोर कर सकता है।

कुल मिलाकर, भारत में महिलाओं पर वैश्वीकरण का सांस्कृतिक प्रभाव जटिल और बहुआयामी है, जबकि इसने महिलाओं के लिए नए अवसर पैदा किए हैं और पारंपरिक लैंगिक मानदंडों और भूमिकाओं को चुनौती दी है, इसने पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण और लैंगिक असमानताओं को भी कायम रखा है। महिला सशक्तिकरण के लिए वैश्वीकरण की क्षमता को पूरी तरह से महसूस करने के लिए, उन अंतर्निहित सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करना आवश्यक है जो उनकी भागीदारी और एजेंसी को सीमित करती हैं। इसके लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो असमानता और भेदभाव के अन्य रूपों के साथ लिंग के प्रतिच्छेदन को पहचानता है, और लिंग–संवेदनशील नीतियों और कार्यक्रमों को बढ़ावा देता है जो महिलाओं को सशक्त बनाता है व लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण ने भारत में महिलाओं के लिए नए अवसर पैदा किए हैं, लेकिन इसने लैंगिक असमानताओं और भेदभाव को भी कायम रखा है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी सामाजिक मानदंडों और पितृसत्तात्मक व्यवहारों के कारण सीमित है जो उनकी गतिशीलता और शिक्षा और प्रशिक्षण तक पहुंच को प्रतिबंधित करते हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण ने अनौपचारिक क्षेत्र के विकास को भी प्रेरित किया है, जो कम–कुशल और कम वेतन वाली नौकरियों में बड़ी संख्या में महिलाओं को रोजगार देता है। वैश्विक बाजार के विस्तार से उपभोक्ता संस्कृति का विकास हुआ है और महिलाओं के शरीर का वस्तुकरण हुआ है। पश्चिमी सांस्कृतिक मूल्य और मानदंड भारतीय समाज में तेजी से प्रचलित हो गए हैं, जिससे कॉस्मेटिक सर्जरी, बॉडी शेमिंग और यौन उत्पीड़न में वृद्धि हुई है।

लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और महिलाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से नीतियों को स्थानीय संदर्भ में ध्यान में रखना चाहिए और भारत में महिलाओं की जरूरतों और आकांक्षाओं के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए। इसमें लैंगिक असमानताओं और भेदभाव को बनाए रखने वाले सामाजिक मानदंडों और पितृसत्तात्मक व्यवहारों को संबोधित करना, शिक्षा और प्रशिक्षण तक महिलाओं की पहुंच को बढ़ावा देना और यह सुनिश्चित करना शामिल है कि आर्थिक अवसरों तक महिलाओं की समान पहुंच है।

इसके अलावा, महिलाओं के निकायों के वस्तुकरण और वस्तुकरण को संबोधित करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए और मीडिया में महिलाओं के अधिक सकारात्मक और सशक्त प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देना चाहिए। इसमें मीडिया में महिलाओं की आवाज़ और दृष्टिकोण का समर्थन करना और विज्ञापन और मनोरंजन में महिलाओं के अधिक विविध और समावेशी चित्रण को बढ़ावा देना शामिल है।

अंत में, वैश्वीकरण का भारत में महिलाओं पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ा है। जबकि इसने

महिलाओं के लिए वैश्विक अर्थव्यवस्था में भाग लेने के नए अवसर पैदा किए हैं, इसने लैंगिक असमानताओं और भेदभाव को भी कायम रखा है। लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और महिलाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से नीतियों और हस्तक्षेपों को स्थानीय संदर्भ को ध्यान में रखना चाहिए और भारत में महिलाओं की जरूरतों और आकांक्षाओं के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए। केवल तभी हम लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए वैश्वीकरण की क्षमता को सही मायने में महसूस कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. एंडियप्पन, वी., और वान, वाई। (2020), प्रक्रिया प्रणाली इंजीनियरिंग में विशिष्ट दृष्टिकोण, कार्यप्रणाली, विधि, प्रक्रिया और तकनीक, *स्वच्छ प्रौद्योगिकी और पर्यावरण नीति,* 22 (3)
2. बंसोडे, एस., अंकुश, जी., मांडे, जे., और सुरदकर, डी. (2013), अपने सदस्यों के सामाजिक–आर्थिक विकास पर एसएचजी का प्रभाव, *जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी मोबिलाइज़ेशन एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट,* 8(1)
3. जायसवाल, ए. (2014), भारतीय ग्रामीण महिलाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव पर एक मानवशास्त्रीय दृष्टिः एक महत्वपूर्ण वास्तविकता।
4. सिंह, एस., और होगे जी., (2010), "कामकाजी" महिलाओं के लिए वाद–विवाद के परिणामः भारत से चित्रण।
5. दासगुप्ता, के. (2003, 31 जुलाई), *वैश्वीकरण और भारतीय महिलाः समस्याएं, संभावनाएं और सूचना*।
6. जी.के.आज. (2017, 31 अक्टूबर), *भारत में महिलाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव*।

——==00==——